रूप चतुर्दशी 14 नवम्बर 2020

पंच पर्व का द्वितीय दिवस है रूप चतुर्दशी

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी 'नरक चतुर्दशी' कहलाती है। सनत्कुमार संहिता के अनुसार इसे पूर्वविद्धा लेना चाहिये। इस दिन अरुणोदय से पूर्व प्रत्यूषकाल में स्नान करने से मनुष्य को यमलोक का दर्शन नहीं करना पड़ता। यद्यपि कार्तिकमास में तेल नहीं लगाना चाहिये, फिर भी इस तिथि विशेष को शरीर में तेल लगाकर स्नान करना चाहिये। जो व्यक्ति इस दिन सूर्योदय के बाद स्नान करता है, उसके शुभ कार्यों का नाश हो जाता है। स्नान से पूर्व शरीर पर अपामार्ग का भी प्रोक्षण करना चाहिये। अपामार्ग को निम्न मंत्र पढ़कर मस्तक पर घुमाना चाहिये। इससे नरक का भय नहीं रहता-

सितालोष्ठसमायुक्तं सकण्टकदलान्वितम्।
हर पापमपामार्ग भ्राम्यमाणः पुनः पुनः।।

स्नान करने के बाद शुद्ध वस्त्र पहनकर, तिलक लगाकर दक्षिणाभिमुख हो निम्न नाम मंत्रों से प्रत्येक नाम से तिलयुक्त तीन-तीन जलांजलि देनी चाहिये। यह यम-तर्पण कहलाता है। इससे वर्ष भर के पाप नष्ट हो जाते हैं।

'ॐ यमाय नमः', 'ॐ धर्मराजाय नमः', 'ॐ मृत्यवे नमः', 'ॐ अन्तकाय नमः', 'ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः', 'ॐ औदुम्बराय नमः', 'ॐ दध्नाय नमः', 'ॐ नीलायनमः, 'ॐ नीलाय नमः', 'ॐ परमेष्ठिने नमः', ॐ वृकोदराय नमः', 'ॐ चित्राय नमः', 'ॐ चित्रगुप्ताय नमः'।

इस दिन देवताओं का पूजन करके दीपदान करना चाहिये। मंदिरों, रसोईघर, स्नानघर, देववृक्षों के नीचे, नदियों के किनारे, चहारदीवारी, बगीचे, गोशाला आदि स्थान पर दीपक जलाना चाहिये। त्रयोदशी से अमावस्या तक दीप जलाने चाहिये।

रूप चर्तुदशी के दिन सम्पूर्ण सौन्दर्य प्राप्ति हेतु अवश्य करें

सौन्दर्य लक्ष्मी साधना

'रूप दाह जयं देहि सौन्दर्य लक्ष्मी'

यौवन एवं सौन्दर्य की साकार साधना

महालक्ष्मी का तो संपूर्ण स्वरूप ही सौन्दर्यमय है, फिर उनकी किसी भी रूप में उपासना की जाय, किन्तु जहां बात आती हो यौवन की एवं इस शारीरिक सौन्दर्य की, तब तो उनका एक विशेष रूप सौन्दर्य लक्ष्मी को ही उतारना पड़ता है इस जीवन में।

सौन्दर्य निर्भर करता है, आंतरिक सौन्दर्य पर और आंतरिक सौन्दर्य आता है देवत्व पूर्ण चिंतन से, निश्छलता से और सरलता से। रंग निखारा जा सकता है। किसी प्रसाधन का सहारा लेकर, लेकिन भोलापन और मासूमियत निखारने की कोई क्रीम अभी तक नहीं बनी है, अल्हड़पन लाने का कोई फार्मूला भी नहीं बनाया जा सका है, बरबस किसी को अपनी ओर खींच लाने वाली कशिश पैदा करने की कोई भी औषधि न तो बनी है न बन सकेगी। अपने पास किसी को खींच कर बैठा लेना और उसका उठने का मन न चाहे-ऐसा तो प्राकृतिक रूप से अथवा किसी साधना द्वारा प्राप्त चेहरे पर दौड़ती मुस्कान द्वारा ही संभव है। नयनों और वाणी से कोयल की कुहूक बनकर जीवन की घनी अमराई में फूटता है, ऐसा ही सौन्दर्य मन पर वर्षा की पहली बूंद बनकर गिरता है, और भर देता है एक सोंधी-सी महक...

पुरूष हो, तो देवत्व पूर्ण मुख मुद्रा लिए बलिष्ठ शरीर और स्त्री हो तो-सुगठित शरीर, चेहरे पर लावण्य की हल्की पर्त झलकती हुई, लगे कि हम जिस सौन्दर्य का वर्णन करते रहे वहीं कई-कई युग बाद आकर सामने खड़ा हो गया है। घुटनों तक लटकते बलिष्ठ लंबे बाहु, उभरा हुआ सीना, गुलाबी आभा लिए सुगठित चेहरा, दृढ़ ठोढ़ी, लंबी नासिका और कजरारी आँखें पर...फिर इकहरा मांसल बदन, सारे देह में मादक-सी लहरें लिए हुए घने बाल और होठों पर सलज्ज मुस्कान यही तो है सौन्दर्य की झलक और यही तो उतर आता है आंखों में बात कहते-सुनते।

जीवन में इसको प्राप्त करने का एक ही उपाय है-'सौन्दर्य लक्ष्मी'। सौन्दर्य की लक्ष्मी किसी देवी विशेष का नाम नहीं, जब हम महालक्ष्मी की साधना उन्हें सौन्दर्य की प्रदात्री मानकर करते हैं, तब वे ही उतर आती है सौन्दर्य लक्ष्मी बनकर और सौन्दर्य धन के रुप में दे जाती है उमंग, उल्लास, खिलखिलाहट, आकर्षण, सम्मोहन...और सौन्दर्य भी तो...! सौन्दर्य फिर टिक जाता है ऐसा कि जो न छलके, न बिखरे, बस अपनी ठण्डक से सामने वाले की आंखों में हल्की सी कोई लहर दौड़ा दे...शीतलता की।

देवी का सबसे अधिक मनोहर चित्रण जिस रूप में किया जाता है, वह है उसका महालक्ष्मी स्वरूप। कवियों और रचनाकारों ने देवी के मनोहर स्वरूप को लेकर अनेक सुंदर कल्पनाएं की हैं, काव्य रचे हैं और उपमाएं दी हैं। बस यहीं तक नहीं उन्होंने और आगे बढ़कर उन्हें ही आधार बनाकर उपाय भी ढूंढ़ निकाले-यौवन को प्राप्त करने के, असौन्दर्य को सौन्दर्य में परिवर्तित करने के

सौन्दर्य को और भी अधिक सजा-संवार देने की, यौवन की उछाल में कुछ और भी सूत्र जोड़ देने को और सौन्दर्य के तो सैंकड़ों पक्ष हैं-रूप, रंग, अंगों का कटाव, केशों का घनापन, झुर्रियों का दूर होना, चेहरे पर ओज बढ़ना, कपोलों पर गुलाबी आभा पुष्पगुच्छ की तरह आ मंडराना, आंखों में गुलाबी रंगत आ जाना या चमक उठना। सौन्दर्य तो अंग-अंग की बात है, लेकिन क्या इतना सब कुछ एक साथ संवारा जा सकता है? क्या जीवन में केवल सौन्दर्य को लेकर ही अपने बहुमूल्य समय में से अधिकांश समय व्यतीत किया जा सकता है?

विद्वान्, शास्त्रकार अनेक प्रश्नों को लेकर सौन्दर्य के विषय पर सौन्दर्य की विवेचना करते हुए, नख शिख वर्णन करते हुए एक ग्रंथ लिखना प्रारंभ किया, लेकिन अंत तक वह भी इन्हीं प्रश्नों पर पहुँचा कि ऐसा कौन-सा उपाय संभव है, ऐसी कौनसी एक क्रिया है, जिसके द्वारा पूरा का पूरा जीवन सौन्दर्यमय बना लिया जाये। अनेक पद्धतियों पर पूरे जीवन भर चोट करने के बाद जिस पद्धति को सर्वश्रेष्ठ माना वह है- 'सौन्दर्य लक्ष्मी साधना'।

इसके ग्रंथकार ने ग्रंथ में अत्यंत सुंदर ढंग से कहा है कि जीवन तो पारिजात का पुष्प है, जिसकी आयु बहुत कम होती है और जिसका सौन्दर्य अप्रतिम.. लेकिन उसकी आयु स्थायी की जा सकती है, उसकी सुगंध बचाई जा सकती है तो केवल इस सौन्दर्य लक्ष्मी प्रयोग से।

शास्त्रकार ने लक्ष्मी के स्वरूप का मधुर चित्रण करते हुए स्पष्ट किया है-किस प्रकार के लक्ष्मी पूर्ण यौवन और सौन्दर्य की साकार प्रतिमा है, जो अपने वरदायक प्रभाव से साधक के जीवन को भी सौन्दर्यवान् बना सकती है। महालक्ष्मी जब अपने 'सौन्दर्य लक्ष्मी' स्वरूप में कृपावान होती है, जो केवल बाह्य सौन्दर्य ही नहीं आंतरिक सौन्दर्य भी प्रदान कर जाती है, क्योंकि यही तो वह उपाय है जिससे पारिजात की सुगंध भर ली जाये अपने अंदर और वह फिर महकता रहता है पूरे जीवन भर, हर पल हर क्षण अपनी आभा और रंग के साथ, जो क्रिया किसी भी उपाय या औषधि या पद्धति से संभव हो ही नहीं सकती, अनेक उपाय कर लेने के बाद, अनेक प्रसाधनों का दुष्प्रभाव देख लेने के बाद यदि जीवन में एक ऐसा साधनात्मक विधान भी अपना कर देख लिया जाये, तो इसमें कोई हानि नहीं है। इस तन की बगिया में कहीं न कहीं से, फूलों भरा पारिजात की सुंगध लिये पौधा अवश्य खिला है...

साधना विधि-

1. कामदेव के मंत्रो से प्रतिष्ठित 'सौन्दर्य यंत्र', 'रुपा माला' , और 'नीलकर्ण मुद्रिका' इन तीनो सामग्रीयों को साधना से पूर्व साधक प्राप्त कर लें।
2. यह साधना दिनांक 27-10-2019 के दिन प्रारंभ करें या फिर माह के किसी भी शुक्रवार के दिन यह साधना करें।
3. रात्रि को 8:45 से 11:30 के मध्य यह साधना करें।
4. साधना करने से एक दिन पूर्व ही अपने साधना कक्ष को अच्छी तरह धोकर साफ-सुथरा कर लें। साधना काल में प्रत्येक सामग्री में नूतनता स्पष्ट होनी चाहिए, क्योंकि सौन्दर्य साधना के लिए यह सब आवश्यक है।
5. स्वयं भी स्वच्छ और सुरुचिपूर्ण वस्त्र धारण करें।
6. अपने सामने एक चौकी बिछा कर, उसके ऊपर एक कपड़ा बिछा लें, पानी से भरा एक सुन्दर कलश रखें, उसके ऊपर पीला चावल हल्दी से रंगकर एक प्लेट में, जो उस कलश पर रखी जा सके, रख दें।
7. पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख कर, सफेद आसन पर बैठकर यह साधना सम्पन्न करें।
8. इसके बाद यंत्र को जल से धोकर पोंछ लें, और यंत्र पर इत्र छिड़क दें, तथा अपने ऊपर भी इत्र छिड़कें, धूप व दीप से वातावरण को सुगन्धमय बनायें।
9. यंत्र को पीले चावलों के ऊपर स्थापित करें, इसके बाद यंत्र पर केसर से पांच बिन्दी लगाएं, जो पांच प्राणों के माध्यम से शरीर में अभिव्यक्त होता है।
10. 'मुद्रिका' को भी यंत्र के ऊपर स्थापित कर दें।
11. निम्न मंत्र को बोलते हुए यंत्र पर पांच बिन्दियाँ लगायें, तथा मुद्रिका पर भी एक बिन्दी लगयें।

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणी ।
ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम्।।

12. अक्षत चढ़ायें-

अक्षतान् धवलान् धवलान् देवि शालीयांतन्दुलांस्तथा।
आनीतांस्तव पूजार्थ गृहाण परमेश्वरि ।।

यंत्र, कलश तथा मुद्रिका पर चावल छिड़कें।

13. इसके बाद धूप और दीप दिखाकर दोनों हाथ मे खुले पुष्प लेकर पुष्पांजलि अर्पित करें-

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद् भवानि च।
पुष्पांजलिर्मयादत्ता गृहाण परमेश्वरि ।।

यंत्र के उपर पुष्प चढा दें।

14. इसके बाद दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें देवी ! आपके भीतर समाहित सभी गुण मुझमें अनुप्राणित हों।

सौन्दर्य भवतीरहोके, माधुर्य ओजमं तेजस्तथेदं ।
रुपोज्जला, रुपदिव्या प्रपन्ना, याचे ये नित्यं त्वं देहि मातः ।।

'हे मां ! आप सौन्दर्य की अधिष्ठत्रि देवी हैं, और तेज सभी दिव्य गुण आप में समाहित हैं, मैं आप से इस रुपराशि की प्राप्ति की कामना करता हूं।

15. इसके बाद निम्न मंत्र का 'रुपामाला' से 5 माला मंत्र जप सुविधानुसार रात्रि में 7 दिन में करें-

मंत्र- ।। ॐ श्रीं सौन्दर्याभिवाप्तये श्रीं नमः।।

16. जप समाप्ति के बाद गुरुपूजन करें व इच्छानुसार गुरु मंत्र जप करें।
17. दो दिन तक इसी प्रकार मंत्र जप करें, इसके बाद समस्त सामग्री को नदी या कुएं में प्रवाहित कर दें।

यह साधना अत्यंत ही प्रभावोत्पादक एवं शीघ्र लाभप्रद है। साधना के थोड़े दिन बाद ही आप अपने भीतर विशेष गुणों का आविर्भाव अनुभव करेंगें, तथा शनैः शनैः सौन्दर्य वृद्धि अनुभव होने लगेगी और दूसरो के साथ-साथ स्वंय को भी इस बात का एहसास होने लगेगा। इस सौन्दर्य लक्ष्मी साधना को गम्भीरता पूर्वक पूर्ण श्रद्धा से करिये और दूसरों को भी प्रेरित करिये।

लक्ष्मी प्रिय लघु शंख

भारतीय संस्कृति और धर्म में शंख का बड़ा महत्त्व है। लघु शंख जिसके घर में रहता है वहाँ मंगल ही मंगल होते हैं, लक्ष्मी स्वयं स्थिर निवास करती हैं। इसे पवित्र स्थान में रखे और पवित्रतापूर्वक नित्य पुष्प, चन्दन आदि से पूजा करे। शंख को कभी भी खाली नहीं रखना चाहिए। इसमें चावल अथवा चाँदी का सिक्का अथवा दूध भरकर रखना चाहिए तथा नैवेद्य चढ़ा कर उसे प्रसन्न करे। ऐसा करने से सर्वविध लक्ष्मी प्राप्त होगी" यह शंख का लघु रूप है इसी कारण इसे लघु शंख कहा जाता है। जो व्यक्ति दक्षिणावर्त्त शंख लेने में समर्थ नहीं है उनके लिये लघु शंख वरदान है। आप इस शंख में जल भर कर लक्ष्मी पूजन के समय प्रयोग कर सकते है। पूजन के बाद शंख के जल को पूरे घर में छिड़क सकते हैं जिससे घर की सभी नकारात्मक शक्तियों का नाश होता है। जिसके घर में शंख होता है, उसके घर में अक्षय भंडार बना रहता है। वस्तुतः जो भाग्यशाली होते हैं, जिनके जीवन में भाग्योदय होता है, उन्हीं के घर में इस प्रकार का लघु शंख पाया जाता है।

लघु शंख दक्षिणा न्यौछावर 1100/-

सम्पर्क करें:- विश्व तंत्र ज्योतिष
प्लॉट नं.-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज मैन गेट के पास, जोधपुर(राज.)
0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्स : 0291-2618625
Email : tantravtj@yahoo.co.in Visit us : www.kamalshrimali.com